

चारों कषायों को तूने है पाला,
 आतम प्रभु को जो करती है काला ।
 इनकी तो संगति को छोड़, छोड़-छोड़-छोड़ ॥२॥
 पर मैं जो ढूँढा न भगवान पाया,
 संसार को ही है तूने बढ़ाया ।
 देखो निजातम की ओर, ओर-ओर-ओर ॥३॥
 मस्तों की दुनिया में तू मस्त हो जा,
 आतम के रंग में ऐसा तू रँग जा ।
 आतम को आतम में घोल-घोल-घोल ॥४॥
 भगवान बनने की ताकत है तुझमें,
 तू मान बैठा पुजारी हूँ बस मैं ।
 ऐसी तू मान्यता को छोड़, छोड़-छोड़-छोड़ ॥५॥

शास्त्रभक्ति

(१)

हे जिनवाणी माता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ।
 शिवसुखदानी माता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥टेक॥
 तू वस्तु-स्वरूप बतावे, अरु सकल विरोध मिटावे ।
 हे स्याद्वाद विख्याता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥१॥
 तू करे ज्ञान का मण्डन, मिथ्यात कुमारग खण्डन ।
 हे तीन जगत की माता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥२॥
 तू लोकालोक प्रकाशे, चर-अचर पदार्थ विकाशे ।
 हे विश्वतत्त्व की ज्ञाता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥३॥
 शुद्धातम तत्त्व दिखावे, रत्नत्रय पथ प्रकटावे ।
 निज आनन्द अमृतदाता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥४॥
 हे मात! कृपा अब कीजे, परभाव सकल हर लीजे ।
 'शिवराम' सदा गुण गाता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥५॥